18/01/2026

जीवन की टेढ़ी-मेढ़ी राहें: एक सफर की कहानी

जीवन एक अजीब यात्रा है। कभी-कभी यह एक सीधी सड़क की तरह लगता है, लेकिन अधिकतर समय यह पहाड़ी रास्तों की तरह टेढ़ा-मेढ़ा होता है। मेरी दादी कहा करती थीं कि जिंदगी सलाद के पत्ते की तरह होती है - कभी कुरकुरी और ताजी, कभी मुरझाई हुई। यह बात मुझे तब समझ नहीं आती थी, लेकिन आज जब मैं अपने जीवन के चालीस वर्षों को पीछे मुड़कर देखता हूं, तो उनकी बात की गहराई समझ में आती है।

शुरुआत की दुर्दशा

मेरा जन्म मुरादाबाद के एक छोटे से मोहल्ले में हुआ था। घर की हालत बेहद खराब थी। पिताजी एक छोटी सी दुकान चलाते थे जहां वे सब्जियां बेचते थे। सलाद के पत्ते, टमाटर, गाजर - यही उनकी पूंजी थी। कमाई इतनी मामूली थी कि महीने के अंत में घर चलाना मुश्किल हो जाता था। हमारे घर में एक पुराना सा दीया था जो मिट्टी के तेल से जलता था। बिजली का कनेक्शन लेने की हैसियत नहीं थी, इसलिए उस टिमटिमाते दीये की रोशनी में ही मैं पढ़ाई किया करता था।

माँ कहती थीं, "बेटा, हमारे पास भले ही कम है, लेकिन हौसला बड़ा रखना।" लेकिन बचपन में यह समझना मुश्किल था। जब स्कूल के दोस्त नए कपड़े पहनकर आते, जब वे अपने टिफिन में स्वादिष्ट खाना लाते, तो मन में कुंठा होती थी। मेरा टिफिन हमेशा साधारण होता - रोटी और आलू की सब्जी, या कभी-कभी सिर्फ नमक और मिर्च के साथ रोटी।

संघर्ष के वक्र

जीवन का रास्ता कभी सीधा नहीं होता। यह एक घुमावदार पथ की तरह होता है, जहां हर मोड़ पर कुछ नया इंतजार कर रहा होता है। मेरे जीवन में भी ऐसे कई मोड़ आए। दसवीं कक्षा में मैंने अच्छे अंक प्राप्त किए, लेकिन आगे की पढ़ाई के लिए पैसे नहीं थे। पिताजी की दुकान में आमदनी इतनी नगण्य थी कि घर का खर्च भी मुश्किल से चलता था।

मैंने दिन में स्कूल जाना शुरू किया और शाम को एक छोटे से होटल में बर्तन धोने का काम करने लगा। वह काम बेहद दयनीय था - गंदे बर्तन, गर्मी, थकान, और ऊपर से मालिक की डांट। लेकिन मुझे पढ़ाई जारी रखनी थी। रात में जब मैं उस मंद रोशनी वाले दीये के नीचे बैठकर पढ़ता, तो माँ मेरे सिर पर हाथ फेरती और कहती, "एक दिन तुम्हारी मेहनत रंग लाएगी।"

बारहवीं कक्षा पास करने के बाद मुझे एक स्थानीय कॉलेज में दाखिला मिला। वहां की फीस भी हमारे लिए बड़ी चुनौती थी, लेकिन किसी तरह पिताजी ने कर्ज लेकर मेरी फीस भरी। मैं जानता था कि यह कर्ज हमारे परिवार पर एक बड़ा बोझ है, इसलिए मैंने और मेहनत करने का फैसला किया। मैंने ट्यूशन पढ़ाना शुरू किया - छोटे बच्चों को उनके घर जाकर पढ़ाता था।

जीवन के घुमावदार रास्ते

कॉलेज के दिनों में मुझे एहसास हुआ कि जीवन वास्तव में कितना जटिल और घुमावदार है। यह किसी सीधी रेखा की तरह नहीं चलता, बल्कि पहाड़ी रास्तों की तरह उतार-चढ़ाव से भरा होता है। कभी लगता कि सब कुछ ठीक चल रहा है, और अचानक कोई नई मुसीबत सामने आ जाती।

तीसरे साल में पिताजी बीमार पड़ गए। उनकी दुकान बंद हो गई और घर की आर्थिक स्थिति और भी दयनीय हो गई। हमारे पास जो थोड़ी बहुत बचत थी, वह सब इलाज में खर्च हो गई। मैंने अपनी पढ़ाई छोड़ने का सोचा, लेकिन पिताजी ने मना कर दिया। उन्होंने कहा, "बेटा, तुम्हारी पढ़ाई ही हमारी उम्मीद है। चाहे कुछ भी हो जाए, तुम पढ़ाई मत छोड़ना।"

मैंने और भी ज्यादा मेहनत की। दिन में कॉलेज, शाम को ट्यूशन, और रात में पढ़ाई। वही पुराना मिट्टी के तेल का दीया मेरा साथी था। कभी-कभी थकान इतनी होती कि किताब पढ़ते-पढ़ते ही सो जाता। लेकिन हार नहीं मानी।

मोड़ और आशा की किरण

स्नातक की परीक्षा में मुझे प्रथम श्रेणी में अंक मिले। यह एक बड़ी उपलब्धि थी, खासकर उन परिस्थितियों को देखते हुए जिनमें मैंने पढ़ाई की थी। कॉलेज के प्रिंसिपल ने मुझे बधाई दी और कहा कि मेरी मेहनत ने फल दिया है। लेकिन असली चुनौती अब शुरू होनी थी - नौकरी ढूंढना।

मैंने कई जगहों पर आवेदन किया। कुछ जगहों से मुझे बुलावा आया, लेकिन वेतन इतना कम था कि घर की जरूरतें पूरी करना मुश्किल लगता। मैं निराश होने लगा था। लगता था कि सारी मेहनत बेकार गई। उन दिनों मैं अक्सर उस दीये को देखता और सोचता कि क्या मेरी जिंदगी भी इसी तरह टिमटिमाती रहेगी, या कभी उजाला होगा?

एक दिन अखबार में एक विज्ञापन देखा - एक निजी कंपनी मार्केटिंग एग्जीक्यूटिव की भर्ती कर रही थी। मैंने आवेदन किया और इंटरव्यू के लिए बुलाया गया। इंटरव्यू में मैंने अपनी पूरी कहानी सुनाई - अपने संघर्ष, अपनी मेहनत, अपने सपनों के बारे में। शायद मेरी ईमानदारी और जुनून ने उन्हें प्रभावित किया। मुझे नौकरी मिल गई।

नई शुरुआत

नौकरी मिलने के बाद जीवन में एक नया मोड़ आया। पहली तनख्वाह मिली तो सबसे पहले मैंने घर के लिए एक इलेक्ट्रिक लैंप खरीदा। जब मैंने उसे जलाया और उसकी रोशनी पूरे कमरे में फैली, तो माँ की आंखों में आंसू आ गए। उन्होंने कहा, "बेटा, तुमने हमारे घर में उजाला कर दिया।"

धीरे-धीरे मैंने पिताजी का कर्ज चुकाया। उनकी सेहत में सुधार हुआ और उन्होंने फिर से अपनी सब्जी की दुकान शुरू की। लेकिन अब वे वहां मजबूरी से नहीं, बल्कि अपनी पसंद से काम करते थे। हमारी आर्थिक स्थिति सुधरी। घर में छोटी-छोटी खुशियां आने लगीं।

लेकिन मैंने कभी अपने संघर्ष के दिनों को नहीं भुलाया। वह पुराना मिट्टी का दीया आज भी मेरे कमरे में रखा है - एक याद की तरह, एक प्रेरणा की तरह। वह मुझे याद दिलाता है कि जीवन में चाहे कितनी भी कम रोशनी हो, हार नहीं माननी चाहिए।

सबक

आज जब मैं युवाओं से मिलता हूं, तो उन्हें अपनी कहानी सुनाता हूं। मैं उन्हें बताता हूं कि जीवन का रास्ता कभी सीधा नहीं होता। यह मोड़ों से भरा होता है, उतार-चढ़ाव से भरा होता है। कभी आप ऊंचाई पर होते हैं, कभी गहराई में। लेकिन हर मोड़, हर उतार-चढ़ाव आपको कुछ सिखाता है।

मेरे जीवन में भी कई ऐसे पल आए जब सब कुछ दयनीय और बेकार लगा। जब लगा कि मेरे पास जो भी है, वह नगण्य है, बेमतलब है। लेकिन उन्हीं परिस्थितियों ने मुझे मजबूत बनाया। उस मंद रोशनी वाले दीये ने मुझे सिखाया कि थोड़ी सी रोशनी भी अंधेरे को दूर कर सकती है।

माँ की सलाह आज भी याद आती है। वे कहती थीं कि जीवन सलाद के पत्ते की तरह है - कभी ताजा, कभी मुरझाया हुआ। लेकिन दोनों ही अवस्थाओं में उसकी अपनी उपयोगिता है। मुरझाए हुए पत्ते भी खाद बनकर नए पौधों को पोषण देते हैं। उसी तरह जीवन के कठिन समय भी हमें भविष्य के लिए तैयार करते हैं।

निष्कर्ष

जीवन एक यात्रा है - एक ऐसी यात्रा जिसमें कई मोड़ आते हैं, कई चुनौतियां आती हैं। कभी रास्ता आसान लगता है, कभी बेहद मुश्किल। लेकिन हर मोड़ पर, हर चुनौती में एक सबक छुपा होता है। मेरे जीवन के संघर्ष ने मुझे यह सिखाया कि परिस्थितियां चाहे कितनी भी खराब क्यों न हों, कमाई चाहे कितनी भी कम हो, अगर आपके अंदर हौसला है, मेहनत करने की इच्छा है, तो आप किसी भी ऊंचाई को छू सकते हैं।

आज जब मैं अपने घर में बैठता हूं, बिजली की रोशनी में किताब पढ़ता हूं, तो वह पुराना दीया मुझे याद दिलाता है कि मैं कहां से आया हूं। वह मुझे विनम्र रखता है, जमीन से जुड़ा रखता है। और यह भी याद दिलाता है कि जिंदगी के हर मोड़ पर, हर उतार-चढ़ाव में, उम्मीद की एक किरण हमेशा मौजूद रहती है। बस जरूरत है उसे पहचानने की, उस पर विश्वास करने की।

इसलिए अगर आप भी जीवन में किसी मुश्किल दौर से गुजर रहे हैं, तो याद रखिए - यह दौर भी गुजर जाएगा। आपकी मेहनत, आपका हौसला एक दिन जरूर रंग लाएगा। जीवन की टेढ़ी-मेढ़ी राहों पर चलते रहिए, क्योंकि यही राहें आपको आपकी मंजिल तक पहुंचाएंगी।

विपरीत दृष्टिकोण: संघर्ष की महिमामंडन की सच्चाई

हम हमेशा ऐसी कहानियां सुनते हैं जो गरीबी से अमीरी तक पहुंचने की यात्रा का महिमामंडन करती हैं। एक गरीब लड़का, मिट्टी के दीये की रोशनी में पढ़ाई करता है, संघर्ष करता है, और अंततः सफल हो जाता है। यह कहानी हमें प्रेरित करती है, हमें उम्मीद देती है। लेकिन क्या हम कभी रुककर सोचते हैं कि यह कहानी एक बड़ी सामाजिक समस्या को छुपा रही है? क्या यह व्यवस्था की विफलता को व्यक्ति की जीत की कहानी में बदलने का एक तरीका नहीं है?

व्यवस्था की असफलता को वीरता में बदलना

जब हम किसी गरीब बच्चे की मेहनत की कहानी सुनते हैं, तो हम तालियां बजाते हैं। हम कहते हैं, "वाह, कितना मजबूत इरादा है!" लेकिन हम यह क्यों नहीं पूछते कि आखिर उस बच्चे को मिट्टी के दीये की रोशनी में क्यों पढ़ना पड़ा? क्यों उसके घर में बिजली नहीं थी? क्यों उसके पिता को इतनी कम कमाई से गुजारा करना पड़ा?

हम एक ऐसी व्यवस्था में रहते हैं जो बुनियादी सुविधाओं को विशेषाधिकार मानती है, अधिकार नहीं। शिक्षा, स्वास्थ्य, बिजली, पानी - ये सब मूलभूत आवश्यकताएं हैं, लेकिन लाखों लोगों के लिए ये आज भी दुर्लभ हैं। और जब कोई इन परिस्थितियों में भी सफल हो जाता है, तो हम उसकी व्यक्तिगत मेहनत का जश्न मनाते हैं, लेकिन उस व्यवस्था पर सवाल नहीं उठाते जिसने उसे इतना संघर्ष करने के लिए मजबूर किया।

सफलता की कहानियों का भ्रम

हर साल लाखों बच्चे गरीबी में पैदा होते हैं। उनमें से कितने सफल होते हैं? शायद एक प्रतिशत, या उससे भी कम। बाकी नब्बे प्रतिशत का क्या होता है? वे कहां जाते हैं? उनकी कहानियां क्यों नहीं सुनाई जाती?

सच यह है कि हम उन कहानियों को सुनना पसंद करते हैं जो हमें अच्छा महसूस कराती हैं। हम उस एक व्यक्ति की कहानी सुनते हैं जो सफल हुआ, और यह मान लेते हैं कि "मेहनत से सब कुछ मिल सकता है।" लेकिन यह एक खतरनाक भ्रम है। यह भ्रम उन लाखों लोगों को अदृश्य बना देता है जो उतनी ही मेहनत करते हैं, या शायद उससे भी ज्यादा, लेकिन फिर भी असफल रहते हैं।

गरीबी से बाहर निकलना केवल मेहनत का सवाल नहीं है। यह संयोग, अवसर, सामाजिक नेटवर्क, स्वास्थ्य, और कई अन्य कारकों का परिणाम है। एक बच्चा जो पोषण की कमी से पीड़ित है, जिसके माता-पिता बीमार हैं, जिसके पास पढ़ने के लिए किताबें नहीं हैं, उसके सफल होने की संभावना उस बच्चे से बहुत कम है जो मध्यम वर्ग के परिवार में पैदा होता है।

"मेहनत से सब मिलता है" का झूठ

यह विचार कि "मेहनत से सब कुछ मिल सकता है" एक खूबसूरत झूठ है जो विशेषाधिकार प्राप्त लोगों को अपने विशेषाधिकारों के बारे में अच्छा महसूस कराता है। अगर गरीब लोग गरीब हैं तो यह उनकी अपनी गलती है - वे पर्याप्त मेहनत नहीं करते। अगर कोई अमीर है तो यह उसकी मेहनत का परिणाम है।

लेकिन वास्तविकता बहुत अलग है। एक मजदूर जो दिन में बारह घंटे काम करता है, एक घरेलू कामगार जो सुबह से शाम तक मेहनत करती है, एक किसान जो खेतों में पसीना बहाता है - क्या ये लोग मेहनत नहीं करते? फिर भी वे गरीब क्यों रहते हैं?

सच यह है कि हमारी व्यवस्था असमानता पर आधारित है। कुछ लोगों को जन्म से ही फायदे मिलते हैं - अच्छी शिक्षा, बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं, सामाजिक नेटवर्क, विरासत में मिली संपत्ति। दूसरों को जन्म से ही नुकसान में रखा जाता है।

संघर्ष का रोमांटिकीकरण

हम गरीबी को रोमांटिक बना देते हैं। हम कहते हैं, "संघर्ष आपको मजबूत बनाता है," "कठिनाइयां चरित्र निर्माण करती हैं।" लेकिन यह उन लोगों के लिए कहना आसान है जिन्होंने कभी असली गरीबी नहीं देखी।

गरीबी में कुछ भी रोमांटिक नहीं है। भूखे पेट सोना, बीमारी के इलाज के पैसे न होना, अपने बच्चों को स्कूल नहीं भेज पाना - यह सब दर्दनाक अनुभव हैं, न कि चरित्र निर्माण के अवसर। जब हम गरीबी का महिमामंडन करते हैं, तो हम उसे खत्म करने की जरूरत को कम करके आंकते हैं।

सच्ची समानता की दिशा में

अगर हम वास्तव में एक न्यायपूर्ण समाज चाहते हैं, तो हमें व्यक्तिगत सफलता की कहानियों का जश्न मनाना बंद करना होगा और संरचनात्मक बदलाव की मांग करनी होगी। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि किसी भी बच्चे को मिट्टी के दीये की रोशनी में पढ़ना न पड़े। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि हर बच्चे को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएं, और बुनियादी सुविधाएं मिलें।

सफलता व्यक्तिगत प्रतिभा या मेहनत का परिणाम नहीं होनी चाहिए - यह एक अधिकार होना चाहिए। हर व्यक्ति को अपनी क्षमता को पूरा करने का समान अवसर मिलना चाहिए, चाहे वह किसी भी परिवार में पैदा हुआ हो।

जब तक हम इस भ्रम में जीते रहेंगे कि "मेहनत से सब मिलता है," तब तक हम असली समस्या को नहीं सुलझा पाएंगे। असली समस्या गरीबी है, असमानता है, अवसरों की कमी है। और इसका समाधान व्यक्तिगत मेहनत में नहीं, बल्कि सामूहिक कार्रवाई और संरचनात्मक सुधार में है।

इसलिए अगली बार जब आप किसी की "संघर्ष से सफलता" की कहानी सुनें, तो तालियां बजाने से पहले सोचिए - क्या हम व्यवस्था की विफलता को व्यक्ति की जीत में बदल रहे हैं? क्या हम समस्या को हल करने की बजाय उसे महिमामंडित कर रहे हैं?